"बखसनहार"

- वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाई । अंतरि बाहरि संगि है नानक काई दुराई ।1। पउड़ी ।

अर्थः- हे नानक ! परमात्मा सब जगह मौजूद है, किसी भी जगह उसका अस्तित्व ना हो ऐसा नहीं हैं । सब जीवों के अंदर व चारों तरफ प्रभु अंग - संग है उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं हो सकता ।

ववा वैर न करीऐ काहू । घट घट अंतरि ब्रहम समाहू वासुदेव जल थल महि रविआ । गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ।

अर्थः- हरेक शरीर में परमात्मा समाया हुआ है इस वास्ते किसी के साथ भी कोई वैर नहीं करना चाहिए । परमात्मा पानी में धरती में जर्रे-जर्रे में व्यापक है, पर किसी विरले ने ही गुरु की कृपा से उस प्रभु तक पहुँच हासिल की है ।

वैर विरोध मिटे तिह मन ते । हरि कीरतन गुरमुखि जो सुनते । वरन चिहन सगलह ते रहता । नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता । (259-260)

अर्थः- परमात्मा जाति - पाति, रूप रेख से न्यारा है उसकी कोई जाति पाति कोई रूप रेखा बयान नही की जा सकती । पर हे नानक ! जो जो मनुष्य गुरु की शरण पड़ कर उस हरि को स्मरण करते हैं, उसकी महिमा सुनते हैं उनके मन में से वैर - विरोध मिट जाते हैं ।

- लेखै कतहि न छूटीऐ खिन खिन भूलनहार । बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ।1। पउड़ी

अर्थः- हे नानक ! कह हम जीव खिन खिन भूलें करने वाले हैं, अगर हमारी भूलों का हिसाब किताब हो, तो हम किसी भी तरह इस भार से आजाद नहीं हो सकते । हे बख्शिंद प्रभु ! तू खुद ही हमारी भूलें बख्श, और हमें विकारों के समुंदर में डूबतों को पार लगा ।

लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति । जीउ पिंड जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ।

अर्थः- मनुष्य ना शुक्रगुजार है, गुनाहगार है, होछी मति वाला है, परमात्मा से बेगाना हो के रहता है, जिस प्रभु ने ये जिंद और शरीर दिए हैं, उस अस्लियत को पहचानता ही नहीं ।

लाहा माइआ कारने दह दिसि ढूढन जाई । देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाई ।

अर्थः- माया कमाने की खातिर दसों दिशाओं में माया तलाशता फिरता है, पर जो प्रभु दातार सब कुछ देने के काबिल है, उसे आँख झपकने जितने समय के लिए भी मन में नहीं बसाता ।

लालच झूठ बिकार मोह इहा सपै मन माहि । लपंट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाई ।

अर्थः- लालच - झूठ - विकार और माया का मोह- बस ! यही धन मनुष्य अपने मन में संभाले बैठा है । जो विषयी हैं, चोर हैं, महा निंदक हैं, उनकी संगति में इसकी उम्र बीतती है ।

तुध भावै ता बखसि लैहि खोटै संगि खरे । नानक भावै पारब्रहम पाहन नीरि तरे ।

अर्थः- हे प्रभु ! यदि तुझे ठीक लगे तो तू खुद ही खोटों को खरों की संगति में रख के बख्श लेता है । हे नानक ! अगर परमात्मा को ठीक लगे तो वह विचारों से पत्थर दिल हो चुके लोगों को नाम अमृत की दाति दे कर विकारों की लहरों में डूबने से बचा लेता है ।

खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक । भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ।1। पउड़ी।

अर्थः- हे नानक ! कह हे प्रभु ! हम जीव मायावी पदार्थ ही खाते - पीते और माया के रंग तमाशों में हंसते खेलते अनेक जूनियों में भटकते आ रहे हैं, हमें तू स्वयं ही संसार समुंदर में से निकाल हमें तेरा ही आसरा है।

खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाई । खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाई ।

अर्थः- मनुष्य मायावी रंगों में मन परचाता परचाता अनेक जूनियों में से गुजरता दुख पाता आता है । अगर गुरु मिल जाए, अगर गुरु के वचन में चित्त जुड़ जाए, तो सारे दुख - कष्ट मिट जाते हैं ।

खिमा गही सच सचिओ खाइओ अंम्रित नाम । खरी क्रिपा ठाकुर भई अनंद सूख बिस्राम ।

अर्थः- जिसने गुरु दर से क्षमा का स्वभाव ग्रहण कर लिया, नाम - धन इकट्ठा किया, नाम अमृत को अपनी आत्मिक खुराक बनाया उस पर परमात्मा की बड़ी मेहर होती है, वह आत्मिक आनन्द - सुख में टिका रहता है ।

खेप निबाही बहुत लाभ घरि आए पतिवंत । खरा दिलासा गुरि दीआ आए मिले भगवंत ।

अर्थः- जिस मनुष्य ने गुरु से विधि सीख के महिमा का वणज -व्यापार सारी उम्र भर निभाया, उसने लाभ कमाया, वह भटकना से बच के अडोल मन हो जाता है और आदर कमाता है । गुरु ने उसे और अच्छी दिलासा दी, और वह भगवान के चरणों में जुड़ा । पर ये सब प्रभु की मेहर है ।

आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि । नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि । (261)

अर्थः- हे प्रभु ! ये सारा खेल तूने ही किया है, अब भी तू ही सब कुछ कर रहा है । लोक - परलोक में जीवों का रक्षक तू स्वयं ही है । हे नानक ! जो प्रभु हरेक शरीर में मौजूद है, सदा उसी की ही महिमा करनी चाहिए ।

करण कारण प्रभ एक है दूसर नाही कोइ । नानक तिस बलिहारणै । जलि थलि महीअलि सोई ।

अर्थः- इस सारे जगत का मूल कारण भाव, बनाने वाला एक अकाल - पुरख ही है, कोई दूसरा नहीं है । हे नानक ! मैं उस प्रभु से सदके हूँ, जो जल में थल में और धरती के तल पर भाव, आकाश में मौजूद है ।

करन करावन करनै जोग । जो तिसु भावै सोई होग ।

अर्थः- प्रभु सब कुछ करने की स्मर्था रखता है, और जीवों को काम करने के लिए प्रेरित करने के समर्थ भी है, वही कुछ होता है जो कुछ उसे अच्छा लगता है ।

खिन महि थापि उथापन हारा । अंत नहीं किछ पारावारा ।

अर्थः- आँख की झपक में जगत को पैदा करके नाश भी करने वाला है, उसकी ताकत की कोई सीमा नहीं है।

हुकमे धारि अधर रहावै । हुकमे उपजै हुकमि समावै ।

अर्थः- सृष्टि को अपने हुक्म में पैदा करके बिना किसी आसरे टिकाए रखता है, जगत उसके हुक्म में पैदा होता है और हुक्म में लीन हो जाता है ।

हुकमे ऊंच नीच बिउहार । हुकमे अनिक रंग परकार ।

अर्थः- ऊँचे और नीच लोगों की बरतों भी उसके हुक्म में ही है, अनेक किस्मों के खेल तमाशे उसके हुक्म में ही हो रहे हैं ।

करि करि देखै अपनी वडिआई । नानक सभ महि रहिआ समाई।

(5-276)(सुखमनी)

अर्थ:- अपनी प्रतिभा के काम कर कर के खुद ही देख रहा है ।
हे नानक ! प्रभु सब जीवों में व्यापक है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं – गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"